(देश देशान्तरों में प्रचारित, सबसे सस्ता, उच्च कोटि का आध्यात्मिक-पत्र)

...न नहो में स्वर्ग लोक का लाई।
इन भूतल को ही स्वर्ग बनाने आई॥

र्षिक मूल्य १॥) सम्पादक—श्रीराम शर्मा।

वर्ष ४ मथुरा, १ दिसम्बर सन् १९४३ ई० अङ्क १२

उठो, इन असुरों का संहार कर डालो

सबसे अधिक भयानक और बलवान असुर ऐसे मायावी हैं जो आंखों से दिखाई नहीं पड़ते, मुश्किल ...ान और पकड़ में आते हैं। अत्यन्त गुप्त रूप से यह मन के भीतरी कोने में घँस बैठते हैं और ऐसी जड़ जमाते हैं कि उनको हटाना बड़ा कष्ट साध्य हो जाता है। यह असुर और कोई नहीं 'दुर्भाव' और ...विचार' हैं। भीतर ही भीतर यह दुष्ट शरीर और मन को खा डालते हैं और अन्त में बड़ी निर्दयता पूर्वक ल...किक तथा पारलौकिक नरक की अग्नि में जलते रहने के लिए पटक देते हैं।

आप इन शत्रुओं से सावधान रहिए। इन पाजी यमदूतों का अपने घर में आना जाना रोक दीजिए ...र यदि किसी कोने में छिपे बैठे हों तो बल पूर्वक बाहर निकाल दीजिए। खुदगर्जी, कंजूसी, निष्ठुरता, झल्लाहट ...मित्रता, ईर्षा, कायरता आदि दुर्भावनाएं जब भी अपने में दिखाई पड़े तुरंत ही उनका विनाश करने को ...हो जाइए। यह अनेकों रावण, कंस, पूतना, ताड़का और सूपनखाओं का समूह आपको चुनौती दे रहा है। ...रे राम, कृष्णो! उठो अपने हथियार संभालो और इन असुरों का संहार कर डालो।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work will be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सुधा बीज बोने से पहिले, काल कूट पीना होगा।
पहिन मौत का मुकुट विश्व-हित, मानव को जीना होगा॥

वर्ष ४ | मथुरा, १ दिसम्बर सन् १९४३ ई० | अङ्क १२

* अविचल हो मानव पथ तेरा *

(श्री० दिनकर प्रसाद शुक्ल विशारद, गोहद)

(१)

क्या ग्रीष्म और बरसात तुझे।
क्या हिमका प्रवल प्रपात तुझे॥
तू निश्चल तेरी गति निश्चल--
क्या तम या उल्कापात तुझे॥
अवसान कहां, आरम्भ सदा--
इति कहां निरन्तर अथ तेरा!
निर्भय है मानव पथ तेरा॥

(२)

गिरि शृङ्ग समुन्नत, बन महान।
सर सरि द्रह निर्जन या श्मसान॥
कर समाक्रान्त निर्भय नितान्त--
अर्णव विशाल या आसमान॥
हो आत्म ज्योति से ज्योतित तू--
जग मग हो सुयश अकथ तेरा।
निश्चित है मानव पथ तेरा॥

(३)

दृढ़ता रख कोई भूल न हो।
साहस रख प्रभु प्रतिकूल न हो॥
शूलों की क्या चिन्ता? पर पद--
के नीचे कोई फूल न हो॥
दुख जाये करुण हृदय न कहीं--
मन्तव्य रहे निर्भय तेरा।
अविचल है मानव पथ तेरा!!

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अखण्ड-ज्योति

उतर स्वर्गसे भूमंडल पर 'सत्'की अमर ज्योति आतीहै
वेणु बजाती सत्य-प्रेम की, सुमधुर न्याय गान गातीहै

मथुरा, १ दिसम्बर सन् १९४३ ई०

प्रभु ! आपकी इच्छा पूर्ण हो।

कहते हैं कि वर्तमान समय उन्नति का समय है। आंखों से दिखाई पड़ने वाली बहुत सी दिशाओं में इन दिनों बेशक काफी तरक्की हुई हैं। विज्ञान के बल से तरह तरह की विस्मय जनक चीजों से दशों दिशाएं पट गई हैं, ऐसी ऐसी अद्भुत वस्तुएं हमारे चारों फैली हुई हैं जिन्हें देखकर दांतों तले उङ्गली दबानी पड़ती है। सिद्धान्त है कि "जब एक टीला बनाया जाता है तो दूसरी जगह उतना ही गड्ढा हो जाता है।" आत्मिक उन्नति का रक्त पान करती हुई, उसकी गरदन मरोड़ती हुई, यह भौतिक उन्नति आगे बढ़ी है। ऐश, आराम, चमक दमक, सुभीता सहूलियत, तरकीब तरीके बढ़े हैं पर उनके साथ साथ जीवनका सारा सुख काफूर होगया है। प्राचीन समय में अल्प साधनों के होते हुए भी मनुष्य बहुत सुखी थे, पर आज जितनी ही सुविधाएं बढ़ती जाती हैं उतनी ही अशान्ति और अतृप्ता का सामना उसे करना पड़ रहा है। 'सुख' मनुष्य का परम प्रिय पदार्थ है। इसे प्राप्त करने के लिए वह सदैव प्रयत्न शील रहता है। पूर्व काल में आत्मावलम्बन उसे प्राप्त करने का मार्ग था, आज आत्मा और आध्यात्म तत्वों पर चर्चा करने वाले मूर्ख समझे जाते हैं और हर दिशा में वैज्ञानिक पद्धति का प्रतिष्ठा की जाती है। जीवन को आनन्दमय बनाने के लिए भी भौतिक विज्ञान का आश्रय लिया जाता है। भौतिक विज्ञान के आधार पर जीवन का जो विश्लेषण हुआ है उसके आधार पर यह ठहराया गया कि—"मनुष्य नाशवान् सत्ता है, शरीर के साथ ही उसकी सत्ता मिट जाती है और परलोक, या पुनर्जन्म की बात मिथ्या है। इसलिए ऐश आराम भोगने में कमी नहीं करनी चाहिए। उन्हें प्राप्त करने के लिए हर एक उपाय काम में लाना चाहिए। बड़ी मछली जैसे छोटी मछली को खा जाती है उसी प्रकार छल से बल से कमजोरों का शोषण करके अपने को और अपने साथियों को मौज में रखना चाहिए।" आज का विज्ञान खुले आम यही शिक्षा देता है।

कहते हैं कि "शैतान भी कभी कभी खुदा का नाम लेकर काम चलाता है।" लोग धर्म की, मनुष्यता की, सदाचार का, ईश्वर को दुहाई देते सुने जाते हैं परन्तु आमतौर से 'छल से बल से मौज करने' का उद्देश्य हृदयों के भीतरी कोनों तक धँस गया है। देखा जाता है कि छल झूठ, पाखंड, निष्ठुरता, खुदगर्जी, कपट, शोषण, अपहरण, बेईमानी का चारों ओर तूती बोल रही है। बदमाशियां ऐसी चमचमाती हुई कलईदार पॉलिस के साथ हो रही हैं कि इस बौद्धिक विज्ञान के चकाचौंध में असलियत का पता लगाना कठिन हो जाता है। कुछ ठगते हैं कुछ ठगे जाते हैं। कुछ सताते हैं कुछ सताये जाते हैं। कुछ चमकते हैं कुछ दबाये जाते हैं। इस प्रकार तामसी असमानता की, असत्य की विजय पताका फहराती जाती है, कलयुग अपनी विजय दुंदुभी बजाकर आकाश को गुंजित कर रहा है इस शैतानी सम्मोहन पाश में बँधी हुई मानव जाति आ[illegible] पग पग पर इतने कष्ट उठा रही है जिनका को[illegible]

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हिसाब नहीं। पाप और पारा पचता नहीं। वर्तमान सभ्यता के कलियुगी बहकावेमें आकर मनुष्य जाति ने ऐश और अनीति का आश्रय लिया है वह पारा रोम रोम में से फूट रहा है। शैतान के अट्टहास के साथ मनुष्य जातिका आर्त करुण क्रन्दन भी गुंजित हो रहा है। कैसी ही आज की दिल दहला देने और रोमाञ्च खड़े कर देने वाली भयंकर घड़ी !!

\+ \+ \+ \+

आस्तिकों का विश्वास है कि "जब धर्म की हानि और अधर्म का अभ्युत्थान होता है तब साधुता का परित्राण करने और पापों का विनाश करने के लिए ईश्वरीय सत्ता अवतीर्ण होती है" नास्तिकों का भी ऐसा ही विश्वास है वे मानते हैं कि— "अतिक्रमण का प्रतिक्रिया होती है" अर्थात् जिस बात की अति हो जाती है उसका विरोध उत्पन्न है। जब जलती हुई दुपहरी का मान मर्दन करते हुए प्रकृति के नियम कुछ ही देर बाद शीतल चांदनी प्रकट कर देते हैं तो कोई कारण नहीं कि वर्तमान समय की बढ़ी हुई दुर्भावनाएं चूर चूर होकर सत-युगी सद्भावनाओं को स्थानना न हो, भ्रातृ भाव, सरलता, उदारता, न्याय, विवेक, संतोष, सचाई, ईमानदारी, दया, प्रभृति सद्गुणों का प्रसार न हो

हम कट्टर आस्तिक हैं। ईश्वर पर हमारा अटल विश्वास है, दिन में जगने और रात में सोने के समय जो भी कार्य हमारे शरीर से होते हैं सब ईश्वर के निमित्त, ईश्वर की पूजा के निमित्त होते हैं। जीवन के भूतकाल का एक एक पल हमने प्रभु की अनन्य उपासना में लगाने का प्रयत्न किया है। जब भी हमने अपनी विनम्र साधना के साथ प्रभु की वाणी को सुनने का प्रयास किया है तथा अपने सच्चे स्नेही तपस्वी महात्माओं का अभिमत जाना है तब ऐसा ही प्रतीत हुआ है कि अब वह समय आगया जब कि इस हद दर्जे तक बढे हुए असत्य का अन्त होना चाहिए और उसके स्थान पर सत्य की, सात्विकी वृत्तियों की प्रतिष्ठापना होनी चाहिए।

धर्म स्थापना की ईश्वरीय इच्छाके अनेक प्रमाण मिलते हैं। हम देखते हैं कि नवयुग निर्माण के लिए-सत्य, समानता, विकाश और सदाचार का प्रसार करने के लिए-अपने अपने ढंग से हजारों संस्थाऐं, लाखों जीवन और करोड़ों अन्तःकरण प्रवृत्त हैं। इनमें से जो सच्चे हैं उनका उत्साह, मार्ग और कार्य दिन दिन अधिक ऊँचा चढ़ता जाता है। एक अदृश्य लोक से कोई ऐसी प्रेरणा हो रही है जिससे प्रेरित होकर अधर्म के मिटने और धर्म के फैलने के असंख्यों जड़ चैतन्य साधन उपस्थित हो रहे हैं और होते जा रहे हैं।

ऐसा ही एक संस्थान 'अखंड ज्योति' है। इसकी स्थापना एक बहुत ही साधारण शक्ति वाले व्यक्ति के हाथों हुई और उसी के दुर्बल कंधों पर इसके संचालकत्व का भार पड़ा। गीता का मधुर वेणुनाद करके जागृत गोप आत्माओं को अमृत रस पिलाने वाले भगवान कृष्ण की क्रीड़ा भूमि मथुरा से प्रभु की वही स्वर लहरी इस पत्रिका में पुनः सुनाई पड़ रही है। उसीके अधरामृत को यह बांस की अकिंचन बंसरी अपने पोले अन्तराल में बजने दे रही है। सत्य का, प्रेम का, न्यायका, अमर संदेश आज को क्रन्दन करती हुई मनुष्य जाति को देकर उसे सत् की, चित्त की, आनन्द का साक्षात् प्रतिमा बनाने का अथक परिश्रम कर रही है।

इस अंक के साथ अखंड ज्योति का चौथा वर्ष समाप्त हो रहा है। अगले अंक के साथ वह पांचवें वर्ष में पदार्पण करेगा। इस छोटे से काल में धर्म प्रतिष्ठा का जितना श्रेय प्रभु ने इस नगण्य संस्थान के ऊपर पटक दिया है वह आश्चर्य जनक है। इस सिनेमा और शौकीनी के युग में इतने अधिक व्य-क्तियोंने इसे पसंद किया। जिसकी कोई आशा न थी, अखंड ज्योति की ग्राहक संख्या उत्साह बढ़ाने वाली है। इस वर्ष तो गज को ग्राह के फन्दे से छुड़ाने वाली घटना बिलकुल चरितार्थ होगई। सन् ४२ के

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आरंभ में मथुरा के बाजार से कागज लुप्त होगया, बाहर से लाने में बड़ी अड़चनें थीं, ऐसी दशा में एक बार यह नाव डूबती हुई प्रतीत हुई। कागज न हो तो पत्रिका कपड़ोंपर तो छापी नहीं जा सकती थी, आखिर प्रभु ने एक मार्ग निकाला। हाथ का कागज बनाने की मृत प्राय दस्तकारी जी उठी और उससे भौंड़ा टेढा, काना कुबड़ा, कागज बनने लगा, इसपर छपाई अच्छी नहीं हुई, कुछ पृष्ठ भी घटे, तो भी कितने आश्चर्य की बात है कि किसी एक भी पाठक ने इन त्रुटियों की शिकायत नहीं की वरन् ताड़पत्र और भोजपत्र पर लिखे आर्ष ग्रन्थोंके समान इसपर श्रद्धा रखते हुए आर्थिक सहायता दी, और इस ज्योति को यथावत् ज्वलित रखा। प्रभु का कितने हृदयों में इसके लिए कैसी कैसी प्रेरणाएं करनी पड़ी होंगी, वह श्रम हमारी दृष्टि में गज को ग्राह से बचाने के ही समान है।

जिनका अखंड ज्योति से निकट संपर्क है वे जानते हैं कि यह कागज छापकर बेचने का व्यापार नहीं वरन् मानवीय अन्तरात्मा की सात्विक वृत्तियों को जगाने की एक क्रियात्मक प्रयोग शाला है। जिसमें असंख्य व्यक्तियों के जीवन को सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा, उत्साह, साहस और बल दिया जाता है। एक दो नहीं, हजारों उदाहरण ऐसे मिल सकते हैं जिनमें लोगों की काया पलट होगई, पुरानी हरकतें छोड़कर उन्होंने सीधे मार्ग का रास्ता पकड़ा और निभाया। इस चौथे वर्ष के अन्त में हम इतना ही कहना चाहते हैं कि पाठकों, प्रेमियों, शुभ कांक्षियों सहायकों, सहयोगियों, महात्माओं तथा परमात्माकी कृपा से अखंडज्योति संस्थान द्वारा विभिन्न योनि से जितना धर्म प्रचार कार्य हुआ है, वह उत्साह वर्धक, संतोषजनक तथा आशाप्रद है। हमारा यह विश्वास दिन दिन दृढ़ होता जाता है कि इस केन्द्र द्वारा जो मानव जाति को सुखी बनाने के लिए ज्ञान किया जा रहा है, प्रभु की प्रेरणा, कृपा और क्रिया से वह पूर्ण सफल होगा। प्रभु ! आपकी इच्छा पूर्ण हो।

आत्म साधना से विश्व कल्याण

(योगी अरविन्द घोष)

धर्म द्वारा ही भारत की नवीन जाति गौरव प्राप्त करेगी। योग ही धर्म प्राप्ति की मुख्य प्रणाली है। योग सिद्ध व्यक्ति की शक्ति अपने को गुणान्वित करके आत्म परिधि विस्तृत करेगी! बहुत से बाजों के स्वरों के मिलने से जिस प्रकार एक तान की उत्पत्ति होती है उसी प्रकार बहुत से व्यक्तियों की ऐक्य स्थापना में सुमासंजस्य पूर्ण नवीन राज्य तैयार होगा। वह राज्य किसी व्यक्तिका नहीं बल्कि आत्मा की ऐक्य मूर्ति का देव समाज का होगा।

आत्मा को बिना जाने या बिना पाये जो नवीन समाज गठन का स्वप्न देखा जा रहा है वह सफल नहीं होगा। आत्मा को लेकर ही मानव जीवन है। जीवन के आडम्बर के भीतर सत्य वस्तु प्रच्छन्न होगई है। ज्ञान का विकाश होने पर आत्म लाभ होगा, इसके लिए शिक्षा की आवश्यकता है, यह शिक्षा योग के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। योग के पथ पर अग्रसर होने पर जो समृद्धि और सम्पत्ति उद्भूत होगी, उसी का बाहरी रूप साम्राज्य है। अपने को पाजाने और जान लेने से स्वराज्य प्राप्त होता है स्वराज्य प्राप्त होने के बाद साम्राज्य की रचना होती है।

बुद्धि मानव जीवन का श्रेष्ठ तत्व है। इसी बुद्धि द्वारा देहराज्य पैदा होता है और उसका काम चलता है। बुद्धि ने अपने हिरणमय पात्र द्वारा जो करोड़ों सूर्यों के समान अन्तरात्माओं को आवृत कर रखा है उन्हें समेटना होगा, तभी ज्ञान सूर्य की किरणों के प्रभाव से देह राज्य का नवीन रूप पैदा होगा।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

लोभ-विमूढ़ता से सर्वनाश।

(श्री० 'हृदयस्थ' जी श्रीवास्तव्य, गवालियर राज्य)

राजा प्रताप भानु अपने समय के चक्रवर्ती राजा थे। सभी प्रकार के सुख साधन उन्हें प्राप्त थे और आनंद पूर्वक अपने दिन बिता रहे थे। एक दिन महाराज शिकार खेलने गये। वापिस लौटते समय वे रास्ता भूल गये, और जंगल में भटकते भटकते एक ऐसे कपट वेषधारी मुनि के आश्रम में जा पहुंचे जो बाहर से तो साधु बना हुआ था। पर भीतर उसके भारी असाधुता भरी हुई थी।

महाराज रातभर विश्राम करने तथा उत्तम सत्संग मिलने का यह सुअवसर जानकर घोड़े से वहीं उतर पड़े। कपट मुनि ने आदर पूर्वक उन्हें अपने यहां ठहरा लिया। प्रपंची एवं कपट वेष धारियों की कूट नीति में मूढ़ ही नहीं कभी कभी चतुर मनुष्य भी भूल जाते हैं। इस मुनि ने कुछ ऐसे ही छल छद्म भरे वार्तालाप से महाराज को चकित करदिया और अपने से उन्हें मनोवांछित अभिलाषा पूर्ति का वरदान मांग लेने के लिए लालायित कर दिया।

उत्तरोत्तर बढ़ती हुई विषम वासनाओं की पूर्ति होते जाने पर मनके ऊपर शासन करना, पिंजड़े में से उड़े हुए पक्षी को पकड़नेके सदृश दुष्कर सा है। महाराज प्रताप भानु की बुद्धि अस्थिर होगई और वह अनधिकार चेष्टा को ओर मुड़ पड़ी। अतीव अनुनय से वे याचना करने लगेः—

जरा मरण दुख रहित तनु, समर जितै जनि कोउ।
एक छत्र रिपु हीन महि, राज्य कल्प शत होउ॥

कपट मुनि को उनकी यह आन्तरिक अभिलाषा जानकर यह विचार करने का अवसर मिला कि राजा बिना किसी विशिष्ट साधना के ऐसे दुष्प्राप्य वरदान (मांगने से) मिल जाने पर विश्वास कर रहा है, धर्म, अर्थ, काम,तीन पुरुषार्थों की प्राप्ति जिसे भले प्रकार हो चुकी है उसकी मनोदशा का यह चित्र देखकर उनकी बुद्धि बल तथा भविष्य काल जानने में बड़ी सहायता मिली। और उसने अपने चंगुल में फंसे हुये पक्षी रूप महाराज को भले प्रकार अपने वाक जालमें फंसलिया। फल यह हुआ कि उनके द्वारा एक लक्ष ब्राह्मणों को सकुटुम्ब कराके और उन्हें अभक्ष्य भोजन भक्षण कराने की दुष्क्रिया का आयोजन कराया जिससे उन महाराज को घोर श्राप दिया गया, साथ ही उनकी इस आन्तरिक दुर्बलता का परिचय पाकर अनेक शत्रु उठ खड़े हुये और उन चक्रवर्ती महाराज का घोर पतन होगया।

\+ \+ \+ \+

भद्र पाठको! इस पौराणिक उपाख्यानके अन्दर आप महत्व पूर्ण तथ्य छिपा हुआ देखेंगे। वह यह है कि जो अल्प श्रम में बहुत बड़ा लाभ चाहता है वह लोभ-विमूढ़ व्यक्ति अन्ततः बहुत घाटे में रहता है। ईमानदारी और सचाई के साथ कठोर परिश्रम करने से उत्तम फलों की प्राप्ति होना स्वाभाविक है, परन्तु दूसरों का अहित करके अथवा बिना परिश्रम के किसी की कृपा वरदान द्वारा जो वैभव चाहा जाता है वह प्राप्त नहीं होता, यदि प्राप्त भी होजाय तो ठहरता नहीं, स्वल्प काल में ही विदा होजाता है और पीछे के लिए बड़े बड़े दुखदायी परिणाम छोड़ जाता है।

हम लोगों को लोभ विमूढ़ होकर मृग तृष्णा के हवाई किले न बांधने चाहिए वरन् सन्मार्ग का अवलम्बन करके अपने पौरुष से उचित और सात्विक संपदाओं का संग्रह करने में ही प्रसन्न और संतुष्ट रहना चाहिए।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जो चाहो सो बनजाओ।

(श्री० महात्मा योगानन्द जी महाराज)

तुम मनुष्य ही अपने गुण कर्म से देव, सिद्ध और अवतार हो सकतेहो। तुम में जब शास्त्र कथित दिव्य गुणों का आविर्भाव होगा तब इसी शरीर से देव कहलाओगे और दिव्य गुण का फल देव शक्ति का विकाश रूप ऐश्वर्य अनुभव करने से सिद्ध होंगे, जब तुम मनुष्य से देव और सिद्ध संज्ञा में पहुंच जाओगे तब तुम्हारे में अलौकिक अद्भुत सामर्थ्य आजायगी एवं इस सृष्टि में वैषम्य घटाने की शक्ति होजायगी तब तुम परमात्मा की दश कला की शक्ति विकाश करने वाले देव और बारह कला के सामर्थ्य वाले सिद्ध कहलाओगे और जब तुम अधर्म का उच्छेदन करके धर्म की स्थापना करोगे, दुष्टों का दमन और शिष्टों का पालन कर जिस काल में जैसी आवश्यकता है अपनी आत्म शक्ति से सम्पादन करोगे तब बारह कला से आगे बढ़कर ईश्वर का अवतार कहलाओगे।

तुम मनुष्य ही अच्छे कर्म से देव होगे और बुरे कर्म से पशु होगे और यदि जगत में कोई महान कार्य करने की तुम्हारी प्रबल बासना होगी तो अवतार होगे। जो कार्य तुम्हारी शक्ति से असाध्य है यदि आवश्यकता हुई तो भगवान स्वयं करेंगे, वह भी तुम्हारे मनुष्य शरीर से ही सम्पादित होगा, अतएव दैत्य, दानव, देव, सिद्ध और अवतार तुम ही होगे।

श्रीराम भी अवतारथे और परशुराम भी अवतार थे, एक समय दोनों मिल गये परन्तु परस्पर पहचान न सके इसलिए दोनों में झगड़ा होगया था। इसी तरह अवतार के विषय की समस्या तुम्हारे लिए बड़ी ही विवादास्पद है, परन्तु तुम्हें मान लेना चाहिए कि भगवान के लिए कोई कार्य असाध्य या असंभव नहीं है वे स्वयं पूरा करें या औरों से करावें, ब्रह्म शक्तिको सीमाबद्ध नहीं करदेना चाहिए।

सच्चा सुधार करो!

(महात्मा जेम्स ऐलन)

मनुष्य ऐसे असंख्य सुधार करना चाहता है, जिनमें भीतरी त्याग का नाम भी नहीं होता हर एक आदमी यही सोचता है कि मेरे सुधारों से संसार सदैव के लिए सुधर जायगा परन्तु असल बात तो यह है कि इस तरह काम नहीं चल सकता, स्थायी सुधार नहीं हो सकता। सुधार तो उसी को कहा जा सकता है जो मनुष्य के हृदय को सुधारने का यत्न करता हो,क्योंकि हर एक बुराई उसी जगह से पैदा होती है। जब संसार स्वार्थ तथा कलह को तिलांजलि देकर पवित्र प्रेम का पाठ पढ़ लेगा तब उसमें सर्व व्यापी आनन्द और सुखका सतयुग प्रवेश करेगा।

धनाढ्यों का गरीबों से घृणा करना और गरीबों का अमीरों को तुच्छ समझना बन्द होने दीजिए। लोभी को त्याग और कामातुर को पवित्रता का पाठ सीखने दीजिए, अनुदार हृदय वालों को क्षमा का पाठ सीखने दीजिए, द्वेषियों को दूसरों के साथ सुख मनाना और झूँठी शिकायत करने वालों को अपने आचरण पर लज्जित होना सिखला दीजिए। अगर सभी स्त्री पुरुष इसी मार्ग पर चलने लगें तो फिर क्या पूछना है, वह सतयुग का समय बिलकुल निकट होजाय। इसलिए जो अपने हृदय को पवित्र बनाता है वही दुनियां का सबसे अधिक परोपकारी है।

अपने ऊपर विजय प्राप्त करने और अपने को सुव्यवस्थित बनाने में निरतर संलग्न रहने से ही मनुष्य सच्चा ज्ञान और सच्चा प्रेम प्राप्त कर सकता है, केवल पवित्र आत्मा वालों को ही परमात्मा के दर्शन होते हैं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

नियमित अभ्यास।

(श्री० शेल्डन लेविट एम० डी०)

मुझे असंख्य ऐसे मनुष्यों से मिलने का अवसर प्राप्त होता है जो कहते हैं कि हमारा सारा समय अपने व्यवसायिक और निजी जीवन में खर्च हो जाता है और इतनी फुरसत नहीं रहती कि आध्यात्मिक साधना के लिए कुछ समय निकाल सकें। परन्तु मैं देखता हूँ कि यह उसकी बहाने बाजी है।

मैंने अब से बीस वर्ष पूर्व शरीर और मन को उन्नतिशील बनाने के संबंध में कुछ लिखने आरंभ किये थे। उन लेखों से दूसरों को कितना लाभ हुआ यह मुझे मालूम नहीं पर मुझे स्वयं इससे बहुत लाभ हुआ। उन दिनों मेरे अस्पताल में रोगियों की भीड़ लगी रहती थी। फाड़ चीड़ का काम इतना बढ़ गया था कि रात को बारह बजे तक जुटा रहना पड़ता था। किन्तु चाहे जितनी देर होजाय मैं अपना रात का सभ्यास न छोड़ता। बहुत रात व्यतीत होजाने पर भी मैंने सदैव अपना रात्रि कालीन साधना को जारी रखा। आज जो कुछ प्रतिभा मेरे अन्दर है उसका कारण वही नियमित ता है। यदि मैं निष्ठा पूर्वक उपासना न करता तो मैं आज वह न हुआ होता जैसा कि इस समय हूँ।

कई विद्वान और सम्माननीय व्यक्ति भी समय की पाबंदी में हीला हवाला करते हैं फिर उन ढिल मिल स्वभाव के लोगों के लिए तो कहा ही क्या जाय जो जरा सी कठिनाई आने पर अनियमित होजाते हैं और तनिक सा बहाना मिलने पर हाथ पांव फुलाकर बैठ जाते हैं। फल स्वरूप उनका पिछला प्रयत्न भी बेकार चला जाता है।

मेरे शिष्यों में से जब कोई मुझे लिखता है कि बहुत दिन तक आपकी बताई हुई शिक्षा पर अमल करने से भी कुछ लाभ नहीं हुआ तब मैं समझता हूं कि उसने नियमित रूपसे और मन लगाकर अभ्यास नहीं किया है। सच बात यह है कि किसी अभ्यास को नियमित रूप से करते रहने से वह जीवन का एक अंग बन जाता है। जिस प्रकार खाया हुआ अन्न शरीर का एक भाग बन जाता है ठीक उसी प्रकार निष्ठा और नियम के साथ किये हुए अभ्यास हमारे जीवन के सूक्ष्म तत्वों के साथ पूरी तरह घुल मिल जाते हैं। भले बुरे अन्नों का शरीर पर प्रभाव पड़ता है वैसे ही भले बुरे साधनों का भी मन पर असर पड़ता है और वह आन्तरिक चेतना का एक अङ्ग बन जाते हैं।

चाहे कोई भी साधन क्यों न हो उसे करने से पूर्व इस बात का दृढ़ निश्चय करलो कि मैं इसको निश्चित विधि के साथ ठीक समय पर और नियमित रूप से करूँगा! विश्वास के साथ किये हुऐ छोटे छोटे साधन बड़े अनुष्ठानों से अधिक फलदायक होते हैं। यदि तुम नियमितता को सहचर न बना सको तो क्या फायदा कि अपना समय बिगाड़ो और किसी उत्तम अभ्यास को बदनाम करो।

सांसारिक कार्यों में दिन रात जुटे रहकर मनुष्य अपनी शक्तियों को व्यय किया करता है। एक गौ का सारा दूध यदि ग्वाला दुह ले तो वह बेचारी अपने बछड़े को कुछ न पिला सकेगी। जीवन के विकट संघर्ष में हमारा सारा सत्व व्यय होजाता है और आध्यात्मिक चेतना का पोषण करने के लिए कुछ नहीं बचता। तदनुसार आत्म शक्ति क्षीण होती जाती है। फल यह होता है कि मृत प्राय आत्मशक्ति के ऊपर अनेक भौतिक विकारों का आधिपत्य होजाता है और मनुष्य उन सद्गुणों से वंचित रह जाता है जो ईश्वरीय उपहार की तरह उसे प्राप्त होते हैं।

जैसे भोजन करना और पानी पीना आवश्यक है वैसे ही भजन, प्रार्थना और आत्म चिन्तन द्वारा मानसिक खुराक लेनी चाहिए। नियमितता के साथ अभ्यास करने से उसका ठीक फल मिलता है। मेरा इतना पुराना अनुभव इस बातका साक्षी है कि एक भी निष्ठावान् व्यक्ति का परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

गम्भीर दृष्टि का महत्व ।

हम जितना कुछ पढ़ते देखते या सुनते हैं उसमें से बहुत कम भाग ग्रहण करते हैं। यदि हमारी ग्राहक शक्ति तीव्र हो तो साधारण परिस्थिति में भी जीवन को उच्च बना सकते हैं। जो घटनाऐं प्रति-दिन हमारे साथ घटित होती हैं या जो कुछ बातें अनुभव में आती हैं उनको जरा गहरी दृष्टिसे देखने की आदत डालें तो बहुत सी नई बातें मालूम होती हैं। यों हर बातपर गहरी दृष्टि नहीं डाली जा सकती क्योंकि एसा करने से मस्तिष्क को अधिक थकान आवेगी। हास्य मनोरंजन पाप पूर्ण और व्यर्थ की बातों पर अधिक ध्यान देना व्यर्थ है इनमें शक्ति का अपव्यय होगा और बुरा असर भी पड़ सकता है। इसलिए जो विषय प्रिय हो, जिसमें विशेष ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा हो, जो अपना लक्ष स्थिर किया हो उसमें विशेष योग्यता प्राप्त करने के लिए सदा दत्त चित्त रहो। मानलो कि तुम बलवान होना चाहते हो तो शारीरिक बल संबंधी जो उपदेश, उदाहरण, घटनाऐं या अनुभव देखो उनमें विशेष रूप से चित्त लगाओ और गंभीरता पूर्वक विचार करो कि इसमें क्या बात हानिकारक और क्या उपयोगी है। हम क्या भूल कर रहे हैं और किन नियम का पालन करने से लाभ उठा सकते हैं। इस प्रकार यदि प्रति दिन कुछ सोच विचार करते रहें तो बहुत लाभ होगा। गंभीरता के साथ किया हुआ विचार कभी व्यर्थ नहीं जाता। वह विचारों से विश्वास में आता है और विश्वास से अनुभव में परिणित होजाता है। यह अनुभव यदि क्रिया में आजाय या आदत बन जाय तो जीवन उच्च कोटि का बन जाता है। गौतम बुद्ध ने एक मृतक और बुड्ढे को सड़क पर निकलते हुए देखा और उन्होंने गंभीरता पूर्वक विचार किया एवं उसका अपने जीवन पर घटाया कि मुझे भी इसी तरह वृद्ध होना तथा मरना है तो उनमें एक नवीन ही अनुभव की चेतना प्रवाहित होने लगी। मुझे ऐसी दुर्दशा से बचना चाहिए। इस समस्या को सुलझाते हुए जब वह अनुभव क्रिया रूप में परिणित हुआ तो वे सन्यास लेकर बन को चले गये। बन में जब वह क्रिया परिपक्व होकर आदत के रूप में आगई तो वे प्रचार तपस्वी सिद्ध हुए और अपने जीवन को महान बना सके।

जब हम हलकी दृष्टि से किसी बात को देखते हैं तो वह महत्व पूर्ण होते हुए भी तुच्छ प्रतीत होती हैं और उसमें कुछ विशेषता नहीं मालूम होती। सैकड़ों ज्ञान मय प्रवचन सुनते हैं पर उन्हें सुनकर भी अनसुना कर देते हैं—इस कान से लेकर उस कान से निकाल देते हैं। फल स्वरूप संग्रहणी के रोगी की तरह किसी प्रयत्न से कुछ लाभ नहीं होता। अतिसार के बीमार को कैसा ही मोहनभोग खिलाओ उसका पेट उसमें से रस ग्रहण न करेगा और ज्यों का त्यों टट्टी के रास्ते निकाल देगा। उस भार को वहन करने का कष्ट उठाना ही लाभ मिलेगा इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं। कई सज्जन आत्मिक उन्नति के लिए धर्म पुस्तकें पढ़ते रहते हैं और भजन पूजा करते करते भी बहुत समय व्यतीत कर देते हैं पर उनको वास्तविक उन्नति कुछ नहीं होती जहां थे वहीं बने रहते हैं या उलटा दंभ और सीख जाते हैं। इसका कारण यही है कि वे अपने काम को यों ही—हलके विचार से करते रहते हैं। कई विद्यार्थी बहुत कोशिश करते हैं घंटों पढ़ते या रटते हैं पर वे पूरी शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते और परीक्षा में फ़ेल हो जाते हैं। उनकी पढ़ाई बाहरी मन से ज्यों त्यों करके हुई समझनी चाहिए। यदि वे अपने विषय की एक एक पंक्ति पर ध्यान दें और उसको अच्छी तरह समझकर हृदयंगम करते चलें तो कुशाग्र बुद्धि न होते हुए भी आशातीत सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

किसी विषय पर गंभीरता पूर्वक विचार करने के लिए उसके मानस चित्र बनाना बहुतही उपयोगी है। मानलो कि तुम्हें एक दुकान खोलनी है। अब उसके मानस चित्र बनाओ। किस बाजार में ग्राहक अधिक आते हैं? इस प्रश्न के उत्तर के साथ जब सब बाजारों पर कल्पना दृष्टि को दौड़ाओगे तो तुम्हें पता चल जायगा कि अमुक बाजार में ग्राहकों की अधिक भीड़ रहती है। किस वस्तु की दुकान रखना लाभदायक है? इस प्रश्न के उत्तर में अनेक कल्पना चित्र सामने आवेंगे। उनमें से जो तुम्हें रुचिकर प्रतीत हो चुन लो। इसीप्रकार कैसी वस्तुऐं रखनी? उन्हें कहां से सस्ता लाना? किस भाव बेचना? इन सब बातों के लिए बाजार में अनेक चित्रों की कल्पना करनी पड़ेगी और उनमें से ही अपने लिए सुविधा जनक चुनाव करना पड़ेगा। यदि तुम विद्यार्थी हो और प्लासी की लड़ाई का इतिहास याद कर रहे हो उस घटना की कल्पना करते हुए उसका मानस चित्र कुछ देर तक देखो बस, अब यह चित्र तुम्हारे मस्तिष्क में गहरा अंकित हो जायगा और फिर उसे आसानी से न भूल सकोगे। इस प्रकार के मानस चित्र बनाने से किसी बात को गम्भीरता पूर्वक विचारने में बड़ी सहायता मिलती है।

गम्भीर दृष्टि से देखना और उसका मानसिक चित्र बनाते हुए विचार करना एक प्रकार का बहुत अच्छा मानसिक व्यायाम है जिससे बुद्धि तीव्र होती है और विचार शक्तिको प्रोत्साहन मिलता है।

---

* सात्विक सहायताऐं *

इस मास ज्ञान यज्ञ के लिए निम्नलिखित महानुभावों ने अपनी धर्म उपार्जित कमाई में से निम्न लिखित सात्विक सहायताऐं भेजी हैं। अखंडज्योति इनके प्रति अपनी आन्तरिक कृतज्ञता प्रकट करतीहै।

१०) अहमदाबाद के एक महानुभाव प्रभु प्रीत्यर्थ गुप्त दान।

२) श्री० प्रभाशंकर जेठाभाई ठाकर, पालनपुर।

बेहूदा मजाक।

(श्री० भीकमचंद कपूरचंद पेखावाला, शिवगंज)

द्वापर के अन्त की बात है। युधिष्ठिर को राज सिंहासन मिलने वाला था। चारों ओर खूब सजावट हो रही थी, राज महल तो अद्भुत कला कौशल के साथ सजाया गया था। कलाकारों ने बहुमूल्य कांच और मणियों से इस प्रकार के नक्श बनाये थे जहां जल से भरे हुए स्थान थल, और थल दिखाई पड़ने वाले स्थान जलाशय प्रतीत होते। बड़े बड़ोंकी बुद्धि वहां चकरा जाती थी। दुर्योधन को यह सब पता न था, जब वे उधर से निकले थे सूखा जमीन के धोखे जलाशय में चले गये। कपड़े भीगकर तर होगये, दर्शकों की दन्तावली उपहास करती हुई खुल पड़ी। उतावली द्रोपदी से न रहा गया उसने कह ही तो दिया—"अन्धे के अन्धे ही होते हैं।"

मजाक करना उच्चकोटि की कला है। किसी को चिढ़ाना मजाक नहीं मूर्खता है। और खासतौर से जब कोई व्यक्ति किसी कष्ट में पड़गया हो तब उसे चिढ़ाना तो परले सिरे का बेहूदापन है। दुर्योधन के कलेजे में द्रोपदी के शब्द तीर की तरह पार निकल गये। एक स्त्री द्वारा अपने पिता तक का अपमान होते सुनकर दुर्योधनका कलेजा जल भुनकर खाक होगया। मुंह से उस समय वह कुछ न बोला पर विषधर सर्प की तरह प्रतिहिंसा की आग स्थायी रूप से उसकी छाती में सुलग गई।

हर आदमी जानता है कि महाभारत में कैसी रोमांचकारी रक्त की नदियां बहीं और अनेक दृष्टियों के कैसे कैसे दुष्परिणाम निकले इस सब की मूल में एक बहुत ही छोटी वस्तु थी, और वह थी—'बेहूदा मजाक।' हममें से बहुत आदमी द्रोपदी की गलती को अक्सर दुहराया करते हैं और अकारण मित्रों को शत्रु बनाया करते हैं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वेद की वाणी—

विद्वानों की जिम्मेदारी।

"यज्ञं ये विश्वतोधारं सुविद्वांसा वितेनिरे।"

यजुर्वेद अध्याय ३०

अर्थ—जो विश्व के आधार रूप सत्कर्म को फैलाते हैं वे ही उत्तम विद्वान हैं।

पढ़े लिखे लोगों की कमी नहीं, स्कूल कालेजों की शिक्षा समाप्त करने के बाद वे देखते हैं कि हमारी शारीरिक और मानसिक योग्यता संसार में कोई महत्व पूर्ण कार्य करने लायक नहीं रह, और न ऐसा ही रहा है कि स्वतंत्र उद्योग द्वारा अपना तथा अपने परिवार का भरण पोषण कर सकें। योग्यता यदि रहती भी है तो साहस और आत्म विश्वास तो प्रायः चला ही जाता है जिससे एक ही काम उनके सामने रह जाता है वह है—"चाकरी"। एक समय वह था कि अशिक्षित और अयोग्य होने के कारण जो व्यक्ति चाकरी पर निर्वाह करते थे उन्हें शूद्र का निन्दनीय दर्जा समाज में मिलता था। कुलीन, संस्कारी, स्वाभिमानी और शिक्षित व्यक्ति के लिए यह एक लज्जा की बात समझी जाती थी कि वह गुलामी स्वीकार करे—पेट पालने के लिए शूद्रत्व ग्रहण करे। आज वह समय है कि एक जगह खाली होने की विज्ञप्ति प्रकाशित होते ही छै छै हजार अर्जियां पहुंचती हैं क्लर्की का जीवन बिताने वाले चाकर उत्पन्न करना जिस शिक्षा का उद्देश्य हो न तो वह शिक्षा है और जो नौकरी के लिए जगह जगह दुतकारें खाते फिरते हैं न वे शिक्षित हैं। इन्हें 'पढ़े गधे' कहकर देश के दुर्भाग्य पर आंसू ही बहाये जा सकते हैं।

कोई बड़ी कक्षा उत्तीर्ण करने वाले को विद्वान नहीं कहा जा सकता. विद्वान वह है जिसे ज्ञान है, विवेक है विद्या का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य का विवेक जागृत करना है, जिससे भले बुरे का परख आगई, जो हित अनहित पहचानने लगा, जिसे सत्य असत्य का निर्णय करने की क्षमता उत्पन्न होगई वही विद्वान है, अक्षर ज्ञान से पुस्तकें रटने से, कक्षा उत्तीर्ण करने से विद्या प्राप्त करना नहीं कहते, यह तो साक्षरता है, साक्षरता को विद्या नहीं कहते यह तो विद्या प्राप्त करने का एक साधन मात्र है जिन्होंने विवेक जागृत कर लिया है वे भले ही साक्षर न हों फिर भी विद्वान ही कहे जावेंगे। सन्त कबीर, छत्रपति शिवाजी आदि अनेक महापुरुषों को निरक्षर कहा जाता है इससे उनकी विद्या में कोई न्यूनता नहीं आती। जो लोग केवल पढ़े लिखे हैं किन्तु योग्यताओं का, सद्गुणों का, विचारकता का जिनमें अभाव है उन्हें वस्तुतः विद्वान नहीं समझना चाहिए।

'उत्तम विद्वान' कौन है? इस प्रश्न के उत्तर में यजुर्वेद कहता है कि विश्व का आधार सत्कर्म के ऊपर है और उस सत्कर्म को जो फैलाता है वही उत्तम विद्वान है। सचमुच इस विश्व का आधार सत्कर्मों के ऊपर है, जब तक मनुष्य सत्कर्मों के ऊपर टिका हुआ है, ठीक तरह अपने कर्तव्य का पालन करता है, ईमानदारी, भलमन साहत, दया, प्रेम, उदारता, सेवा आदि सद्गुणों में परायण है तभी तक वह मनुष्य है, और जब यह गुण न रहते तो मनुष्य असुर हो जाता है, असुरों की [illegible] से यह विश्व वास्तविक विश्व नहीं रहता वह नरक बन जाता है। यह निश्चय है कि विश्व का आधार सत्कर्म है, जो उस सत्कर्म को, धर्म को, पुण्य परमार्थ को, बढ़ाते और दृढ़ करते हैं असल में वे ही धरणाधर हैं, वे ही उत्तम विद्वान हैं।

वेद पुकार कर कहता है कि-हे उत्तम विद्वानो विश्व में सत्कर्म फैलाओ। ज्ञान का, विवेकका, सत्य का, सदाचार का, प्रचार करो, जिससे विश्वका आधार टूटने न पावे, संसार की सुख शान्ति नष्ट न होने पावे। उत्तम विद्वानों का कर्तव्य है कि उदर पोषण को ही जीवन लक्ष न बनाकर संसार में सत्कर्मों के प्रचार करने का प्रयत्न करें, उनके ऊपर जनता का पथ प्रदर्शन करने की बड़ी भारी जिम्मेदारी है, वेद यह आदेश करता है कि हे उत्तम विद्वानो! जनता सत्कर्मों की ओर अग्रसर करो। ———

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

पुस्तकें पढ़ा कीजिए।

(श्री० मंगलचन्द जी भण्डारी, अजमेर)

विद्वान 'बेकन' का कथन है कि ज्ञानवान बनने का प्रमुख साधन पुस्तकावलोकन अत्यंत आवश्यक है। शरीर की उन्नति के लिए पौष्टिक आहार चाहिए इसी प्रकार ज्ञान वृद्धि के लिए विद्वान पुरुषों के विचारों को जानना जरूरी है। पेट में से कोई ज्ञानी नहीं होता वरन् परिस्थिति, संगति, एवं वातावरण में रहकर तदनुसार मनोभूमि का निर्माण होता है। हिन्दू का बच्चा हिन्दी, अरबका अरबी, और इंग्रेज का अंग्रेजी बोलने लगता है उन बच्चों के आचार विचार और स्वभाव भी अपनी अपनी जाति के अनुसार हो जाते हैं, इससे प्रकट है कि मस्तिष्क स्वयं तो एक कोरे कागज की तरह है जिस प्रकार के वातावरण में वह रहता है वैसे ही स्वभाव और विचारों से वह ओत प्रोत हो जाता है। इसलिए जिस दिशा में हमें मस्तिष्क का उन्नत करना है उस दिशा में आगे बढ़े हुए विद्वानों का खोजके निष्कर्ष ... रिचित होने का शक्ति भर प्रयत्न करना चाहिए यह काय पुस्तकों को सहायता से आसानी के साथ हो सकता है। क्योंकि कई विद्वान जो इस संसार से गुजर चुके अथवा दूर देशों में रहते हैं अथवा कार्यों में इतने व्यस्त हैं कि सत्संग के लिए पर्याप्त समय हमें नहीं दे सकते उनके विचारों से लाभ उठाने का एक ही मार्ग है, वह है— पुस्तकावलोकन।

अपने घर में रहकर, अपनी फुरसत के वक्त, आप संसार के वर्तमान और दिवंगत महा पुरुषों से मन चाहा सत्संग करना चाहते हैं, दिल खोलकर उनकी बातें सुनना चाहतेहैं तो उनकी पुस्तकें पढ़िये, पुस्तकें कागज पर स्याही से छपी हुई वस्तु का नाम नहीं है वरन् वह संदूक है जिसके अन्दर बहुमूल्य रत्नों का भण्डार बन्द रखा हुआ है। 'ईश्वर की कैसी महती कृपा है कि यह अमूल्य वस्तुऐं हमें चन्द पैसों से आसानी के साथ मिल जाती हैं। भले ही इन छपे हुए कागज के पन्नों का मूल्य कुछ पैसे हो पर उनके अन्दर जो अनमोल मानसिक संपदाऐं भरी पड़ी हैं उनकी तुलना सोने चांदी के बड़े से बड़े ढेर के साथ नहीं की जा सकती।

मूर्ख लोग ख्याल करते हैं कि हमारी अक्ल सब से बड़ी है, हम सब कुछ जानते हैं, किताबों में क्या रखा है, इस तरह की धारणा से वे अपने ज्ञान का मार्ग रुद्ध कर देते हैं, मस्तिष्क को आगे बढ़ने देने से वंचित कर देते हैं। वर्तमान युग में मनुष्य के सामने इतनी असंख्य समस्याएं हैं जिनको साधारण मनुष्य केवल मात्र अपना असंस्कृत बुद्धि से नहीं सुलझाया जा सकता। संसार की पेचीदागियां इतनी अधिक होगई हैं जिनको भली प्रकार जाने, समझे और हल किये बिना जीवन का गति विधि ठीक रीति से नहीं चल सकता। जितने ज्ञान की इस युग में आवश्यकता है उतना अपने आप पेट में से नहीं उपजाया जा सकता, इसके लिए बाहर से ही ज्ञान उपार्जन करना पड़ेगा और उसका सबसे सरल तरीका पुस्तकों का पढ़ते रहना ही है।

विदेशों में हर व्यक्ति का निजी लायब्रेरी होती है, हमारे देश में जेवरों से तो तिजोरियां भरी मिलेगी पर अच्छी पुस्तकों के दर्शन मिलना दुर्लभ होगा। इससे प्रतीत होता है कि हम लोग बौद्धिक उन्नति की ओर से कितने उदासीन हैं और मानसिक भोजन की उपेक्षा करके अपनी दिमागी उन्नति को किस प्रकार रोके हुए हैं। स्वाध्याय हमारे धर्म ग्रन्थों में आवश्यक एवं दैनिक धर्म कर्तव्य माना गया है तत्वदर्शी ऋषि जानते हैं कि निरंतर ज्ञान उपार्जन में लगे बिना मानसिक विकास नहीं हो सकता और मानसिक विकाश के बिना मनुष्य किसी ऊंचे स्थान पर नहीं पहुंच सकता। आज संसार की सभी उन्नति शील जातियों का जीवन क्रम स्वाध्याय से परिपूर्ण है, गरीब लोगों के घेरम

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भी अच्छी ज्ञानवर्धक पुस्तकें खरीदने तथा सामयिक पत्र पत्रिकाएं मगाने में अपना आमदनी का एक भाग खर्च करते हैं, एक हम हैं जो स्वाध्यायके नाम पर कभी हनुमान चालीसा या गोपाल सहस्रनाम का पाठ कर लिया तो बहुत, वरना स्कूल छोड़ने के बाद पुस्तकें पढ़ने की कोई जरूरत ही महसूस नहीं करते। हम भारतीय अपने को अन्य देश वासियों की अपेक्षा अधिक ज्ञानी होने का दावा करते हैं साथ ही स्वाध्याय की इतनी अपेक्षा करते हैं यह बहुत दुख और लज्जा की बात है।

स्वाध्याय हमारा नित्य कर्म होना चाहिए। कोई फुरसत का समय ज्ञान वर्धक पुस्तकें पढ़ने के लिए नित्य ही निकालना चाहिए। रामायण, गीता तथा पूजा पाठ की धार्मिक पुस्तकों का पाठ करने का समय अलग रहना चाहिए, साधारण, व्यवहारिक और सांसारिक ज्ञान की वृद्धि के लिए प्रति दिन अच्छी अच्छी पुस्तकें पढ़नी चाहिए। जो जानकारी देश विदेशों में भ्रमण करने से, विद्वानों का सत्संग करने से, भाषण सुनने से, घटनाओं का अवलोकन करने से प्राप्त होती है वह पुस्तकें पढ़ने से घर बैठे ही प्राप्त हो जाती है। वर्तमान घोर युद्ध में रत सेनापति लोग भी कोई न कोई समय पढ़ने के लिए अवश्य निकालते हैं। सभ्य संसार में राजकीय सभाओं के अधिकारी, शासक, व्यापारी, यात्री, मजदूर, किसान सभी श्रेणियों के व्यक्ति पढ़ने में पूरी दिलचस्पी रखते हैं। भारतीय ऋषियों ने स्वाध्याय के लिए बलपूर्वक आदेश किया है उसपर विदेशी लोग आचरण करते हैं और अपने ज्ञान की वृद्धि करते हुए आगे बढ़ते जाते हैं, एक हम हैं जो तिलक लगाते समय एक पुस्तक के कुछ पन्ने उलटते रहने में ही स्वाध्याय का इतिश्री मान लेते हैं। पाठकों को सामयिक साहित्य पढ़ने से अपनी दिलचस्पी अधिकाधिक बढ़ानी चाहिए, इससे उन्हें लौकिक और पारलौकिक दोनों ही लाभ होंगे।

ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है।

(श्री० मुरारीलाल शर्मा, 'सुरस' मथुरा)

इंग्रेजी की एक कहावत है ' Honesty is the best policy " अर्थात् ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है। साम, दाम, दंड, भेद की चतुर्विधि नीतियां नाना प्रकार के आवरणों के साथ प्रयोग करके लोग अपना स्वार्थ साधन करते हैं। अमुक मात्रा में लाभ भी होता है और तात्कालिक इच्छा पूर्ति भी होजाती है परन्तु लम्बी दृष्टि डालकर गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाय तो प्रतीत होता है "चाहे जिस प्रकार" प्राप्त की हुई सफलता स्थायी नहीं होती, कुछ ही समय बाद उसका पलड़ा उलट जाता है और दूसरे ही परिणाम उपस्थित होने लगते हैं। उससे एक क्षण के लिए भी आत्म संतोष नहीं दे सकता, भले ही उससे कुछ चांदी सोने के टुकड़े और ऐश आराम के साधन इकट्ठे होजांय।

ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है। उससे जो कुछ भी लाभ होता है वह टिकाऊ और वास्तविक होता है। सच्ची सफलता भी ईमानदारों को ही मिलती है; बेईमान आदमियों का कारोबार चार दिन चमक कर अस्त होजाता है परन्तु ईमानदारी का प्रकाश उस व्यक्ति के मरने के बाद भी बहुत समय तक फैला रहता है। बेशक ईमानदारी के आधार पर देर में प्राप्त होता है और उचित मात्रा में प्राप्त होता है, परन्तु वह प्राप्त हुई चीज इतनी आनंद दायक और आत्म संतोष देने वाली होती है कि उसके ऊपर कुबेर का खजाना और इन्द्र का वैभव निछावर किया जा सकता है।

हमें अपना व्यवहार ईमानदारी से परिपूर्ण बनाना चाहिए। घर और बाहर के सारे कारोबारों में ईमानदारी का समावेश करना चाहिए, इससे सच्चे रूप से सारी मनोकामनाएं पूर्ण हो सकती हैं क्योंकि ईमानदारी ही सर्वोत्तम नीति है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बोझ को हलका करलो।

(स्वामी रामतीर्थ)

यदि एक टन या अधिक चारा हाथी की पीठ पर लादा जाय तो उस बोझ को वह पशु जरूर उठा लेता है पर कठिनता से और बड़ा जोर लगाकर वह उस बोझे को ढोता है। यह बोझा हाथी के लिये मुसीबत और परेशानी का सामान हो जाता है। किन्तु वही घास चारा जब हाथी खाता है और उसे पचाकर आत्मसात् करके अपनी देह में ले चलता है, तब वही बोझा उसके लिये बल और शक्ति का स्रोत बन जाता है।

इसलिये वेदांत आपसे कहता है कि दुनियां के सब बोझे अपने कंधों पर मत ले चलिये। यदि तुम उनको अपने सिर पर ले चलोगे तो उस बोझ से तुम्हारी गर्दन टूट जायगी, यदि तुम उन्हें पचालोगे, उन्हें अपना बना लोगे, उन्हें अपना ही स्वरूप अनुभव करलोगे, तो तुम जल्दी २ बढ़ोगे, तुम्हारी गति रुकने के बदले अग्रसर होती जायगी।

जब आप वेदांतको अनुभव करते हैं, तब ईश्वर को आप महान और सर्व व्यापी देखेंगे। ईश्वर ही आप खाते हैं, ईश्वर ही आप पीते हैं, ईश्वर आप में वास करता है। जब आप ईश्वर का चारों ओर अनुभव करेंगे तब आपको वह दिखाई देगा। आपका भोजन ईश्वर के रूप में बदल जायगा। वेदांती के नेत्र संसार की हरेक वस्तु को परमेश्वर मय देखते हैं। हरेक वस्तु उसे प्यारी होती है। क्योंकि परमेश्वर है जब यह भावनाएं मनमें घर करती हैं तो संसार की वस्तुएं तथा घटनाएं अप्रिय नहीं लगतीं भारी या बोझल प्रतीत नहीं होती, बरन् हाथी के चारे की तरह पचकर सब प्रकार सुखदायक होजाती हैं।

पाश्चात्यों की अन्धी नकल।

बेशक पाश्चात्य देशों के निवासी बड़े श्रमशील हैं, वे समय का महत्व जानते हैं। और एक एक क्षण के सदुपयोग का ध्यान रखते हैं, इसका तात्पर्य यह नहीं कि वे कमाई में ऐसे चिपट जाते हैं कि जीवन रूखा या शुष्क होजाय। दिन निकलने से लेकर रात के बारह बजे तक सेठ लोगों की तरह वे दुकान की गद्दी पर नहीं पड़े रहते और न निठल्लों की तरह ताश गंजफा खेलने या बेकार गाल बजाते फिरने में अपना और दूसरों का समय बरबाद करते फिरते हैं। उनके सब काम नियम बद्ध होते हैं, जिस कार्य के लिए जितना समय नियत है उस कार्य में उतना ही समय लगावेंगे। बड़े बड़े जिम्मेदारी के उच्च पदों पर भी काम करने वाले वे लोग पुस्तकें पढ़ने, मित्रों से मिलने, खेलने, मनोरंजन करने, लेख लिखने के लिए समय निकालते हैं, जीवन को सरस बनाये रखने का भी नियम रखते हैं, साथ ही पूरे समय तक राजकीय, व्यापारिक या अन्य प्रधान कार्य कर्मों में जुटे रहते हैं, समय के सदुपयोग के कारण उस समाज में साधारण श्रेणी के व्यक्ति बहुत ज्ञान, धन, मान का उपार्जन कर लेते हैं और स्वस्थ एवं प्रसन्न जीवन बिताते हैं।

हम लोग यूरोपियन लोगों की भद्दी नकल बनाना सीखे हैं, फैशन बनाने में, विदेशी भाषा बोलने में उनसे आगे बढ़ जाते हैं पर अच्छी आदतों की हवा तक भी ग्रहण नहीं करते। जोंक गाय के थन से चिपट कर दूध को नहीं लेती बरन् खून ही पीती है हम लोग फैशन और मिजाज से आधे साहब बनकर अपने को फिजूल खर्च और दुर्गुणी बना लेते हैं पर उनके सद्गुणों की नकल करना बिलकुल भूल जाते हैं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तर्क और श्रद्धा।

धार्मिक और आध्यात्मिक प्रसंगों में तर्क और श्रद्धा दोनों ही की आवश्यकता है। किन्तु किसी एक का आवश्यकता से अधिक बढ़जाना मूल उद्देश्य के लिए विघातक सिद्ध होता है। पुरुषों में तर्क की अधिकता होती है और स्त्रियों में श्रद्धा की, इसलिए देखा गया है कि पुरुष नास्तिकता की ओर बढ़ते हैं और स्त्रियां अन्ध विश्वास को अपनाती हैं। इन दोनों का उचित मात्रा में होना ही आध्यात्मिक सतुलन ठीक रखने में उपयोगी होता है।

पिछले दिनों धार्मिक खंडन मंडन और कुरीतियों का विरोधी आन्दोलन प्रबल हुआ था। तर्क के कुल्हाड़े से अंध विश्वास और भ्रम पाखंडों की कटीली झाड़ियां काटकर साफ करनेका कार्य आरंभ किया गया था, पर अब वह इतना अधिक बढ़ता हुआ दिखाई देता है कि हानिकर पौदों के साथ उपयोगी वृक्षों का भी मूलोच्छेदन आरंभ होगया है। जिसका परिणाम बहुत बुरे रूप में सामने आने की संभावना है।

धार्मिक क्षेत्र में से अनावश्यक रीति रिवाजों और पिछड़े हुए प्रतिबन्धों को हटा देना उचित है परन्तु नवीन वृक्षाकुंरों का लगाना भी आवश्यक है। तर्क द्वारा कुप्रथाओं को हटाना चाहिए किन्तु श्रद्धा द्वारा सुव्यवस्था का प्रसार भी करना चाहिए। फोड़े के सड़े हुए मवाद को चीर कर निकाल देना चाहिए पर उसे अच्छा करने के लिए मरहम लगाना भी आवश्यक है। कुम्हार मिट्टी को फोड़ता है फिर सुन्दर खिलौने बनाता है, दर्जी कैंचो से काटता है फिर सुई से सींता है, बढ़ई तख्ते चीरता है फिर उन्हें जोड़कर फर्नीचर बनाता है। तर्क को प्रधानता देने वाले खंडनवादी सुधारक पहले काम को तो करते हैं पर अक्सर दूसरे कामों को भुला देते हैं।

तर्क की एक सीमा है, वह कुछ हद तक हमारा पथ प्रदर्शन कर सकती है पर जीवन धारा का निर्माण श्रद्धा के द्वारा ही होगा। पहले बीज हुआ या वृक्ष, पहले स्त्री उत्पन्न हुई या पुरुष,इन प्रश्नों का तर्क के पास कुछ उत्तर नहीं है,कौन तार्किक प्रमाणित कर सकता है कि अमुक व्यक्ति मेरा पिता है, यहां हमें श्रद्धा से ही काम लना होगा। मानवीय सद्-गुणों की आधार शिला तर्क के ऊपर नहीं श्रद्धा के ऊपर रखी गई है। पाश्चात्य सभ्यता ने तर्क को प्रधानता दी फल स्वरूप उसके द्वारा जीवन का प्रति फल बड़ा संकुचित, स्वार्थ पूर्ण, कटु और दुखमय होगया। भारतीय संस्कृति में श्रद्धा का प्राधान्य है वह अपने उद्देश्य के लिए मर मिटना सिखाती है किन्तु तर्क कहता है कि—ऋणं कृत्वा घृतम् पिवेत्। कर्ज लेकर घी पियो।

कुछ दिन पूर्व सुधारवादी महानुभाव देव पूजन, तीर्थ स्नान, तिलक चंदन आदि का उपहास करते थे, अब हम देखते हैं कि चोटी जनऊ भी खिसकते जा रहे हैं। पुराणों का विरोध और वेदों का प्रति-पादन था पर अब वेद, यज्ञ,संध्या सभी से छुटकारा प्राप्त किया जा रहा है देवताओं को काल्पनिक बताया जा रहा था पर अब ईश्वर भी 'काल्पनिक जन्तु' घोषित किया जाने लगा है।

एक बार एक खूनी को अदालत से साफ छुड़ा देने के लिए एक वकील ने १००) फीस तय की। वकील ने उसे कह दिया कि अदालत पूछे तो कुछ उत्तर मत देना फिर एक शब्द ही दुहरा देना 'भैं'। खूनी अदालत में पेश हुआ न्यायाधीश ने उससे प्रश्न पूछे पर उसने हर उत्तर में यही कहा—'भैं'। जज ने झुंझला कर कहा—यह 'भैं भैं' क्या करता है? वकील ने कहा हुजूर यह नासमझ है। कुछ जानता नहीं। अदालत ने उसे छोड़ दिया। खूनी जब छूट आया तब वकील ने अपनी फीस मांगी उसने यहां भी वही कहना शुरू किया-'भैं'। वकील

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ने कहा—मुझ से भी 'मै'? खूनी ने कहा—जब कत्ल के मुकदमे से 'मै' के कारण छूट सकता हूँ तो इसी से तुम्हारी फीस से भी छूट सकता हूं। उसने वकील को एक पैसा भी न दिया और घर चला गया। तर्क को अत्यधिक प्रधानता देने के कारण अब लोगों के दृष्टिकोण में नास्तिकता घर करती जा रही है और उसके प्रभाव से आसुरी संपदा बढ़ रही है। इसका वृद्धि क्रम कुछ समय उपरान्त इस देश को तेतीस करोड़ देवताओं को आदमखोर भेड़िये बना दे सकता है।

भारतीय योग शास्त्र का संसार के लिए यह संदेश है कि—'मस्तिष्क और हृदय को एक करके उन्नति के लिए आगे बढ़ो।' तर्क करना उचित है पर श्रद्धा को भुला न देना चाहिए। हमें जिज्ञासु होना चाहिए कुतर्की नहीं, हमें सत्य की शोध करनी चाहिए वितंडा वाद नहीं बढ़ाना चाहिए। दूसरे क्षेत्रों में तर्क की प्रधानता रह सकती है परन्तु आत्म शान्ति के एक मात्र छायादार वृक्ष 'श्रद्धा' पर आक्रमण नहीं करना चाहिए। अन्यथा हम सर्वत्र अशान्ति ही अशान्ति अनुभव करेंगे। आत्म विश्राम करने के लिए श्रद्धा ही एक मात्र सुरभित वाटिका है तर्क की थोड़ी सी गर्मी पाकर यह वाटिका फल फूलों से लद जायगी किन्तु यदि दावानल से इसे जलाने का प्रयत्न किया जायगा तो हमें चारों ओर अशान्ति और आशंका की लपटों में ही झुलसना पड़ेगा।

❀ सूचना ❀

मैनपुरी में हमारी पुस्तकें—"श्री० देवीसहाय जी वैद्य, श्यामा श्याम भवन, करहल दरवाजा मैनपुरी के यहां मिलती हैं। स्थानीय ग्राहक वहीं से खरीद लिया करें। इसमें डाक खर्च की बचत रहेगी। —मैनेजर 'अखंड ज्योति'

धम्मपद का उपदेश।

मनुष्य को चाहिए कि दूसरों को शिक्षा दे, पढ़ावे और उनकी अशुभ बातों को दूर करे। ऐसा कर्तव्य निष्ठ पुरुष, सज्जनों को प्रिय लगता है और दुर्जनों को अप्रिय। —पंडित वग्गो

पापी को मित्र न बनाओ और न अधम पुरुष को। कल्याण करने वाले को मित्र बनाओ और श्रेष्ठ पुरुषों के साथ रहा करो।

—पंडित वग्गो

जैसा विशाल पर्वत हवा के झोकों से हिलते डुलते नहीं वैसे ही बुद्धिमान लोग निन्दास्तुति के कारण अपने कर्तव्य से विचलित नहीं होते।

—पंडित वग्गो

उन लोगों को यह संसार बन्धन रूप नहीं होता जो पृथ्वी के समान संतोषी, खंभे के समान सुस्थिर और झील के समान निर्मल हैं।

—अरहन्त वग्गो

न नग्न रहने से, न जटा से, न भस्म लगाने से, न उपवास से, न भूमि पर लेटने से, न भिन्न भिन्न आसनों से वह पुरुष पवित्र हो सकता है जो तृष्णा के बन्धनों से नहीं छूटा है। —दण्ड वग्गो

जो सादा कपड़े पहनता हुआ भी दान्त है, इन्द्रिय दमन करता है, नियमित रहता है, ब्रह्मचारी है तथा किसी प्राणी को सताता नहीं, वही ब्राह्मण है, वही श्रमण है, वही भिक्षु है। —दण्ड वग्गो

आत्मा ही आत्मा का सहायक है। दूसरा और भला कौन सहायक हो सकता है? आत्म संयम से मनुष्य दुर्लभ सहायता को प्राप्त कर लेता है।

—अत्त वग्गो

तुम अपने किये पापों से अपने को ही गिराते हो। अपने ही पुण्य से शुद्ध होते हो शुद्धि और अशुद्धि अपनी ही है। दूसरा कोई किसी को शुद्ध नहीं कर सकता। —अत्त वग्गो

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

विष को अमृत बना लीजिए ।

शायद तुम्हारा मन अपने दुस्स्वभावोंको छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता । काम क्रोध लोभ मोह के चंगुल में तुम जकड़े हुए हो और जकड़े ही रहना चाहते हो । अच्छा तो एक काम करो । इन चारों का ठीक ठीक स्वरूप समझलो । इनको ठीक तरह प्रयोग में लाना सीखलो । तो तुम्हारा काम चल जायगा ।

कामना करना कोई बुरी बात नहीं है । अबतक तुम गुड़ की कामना करते थे अब मिठाई की इच्छा करो । स्त्री, पुत्र, धन, यश आदि के लाभ छोटे, थोड़े नश्वर और अस्थिर हैं, तुम्हें एक कदम आगे बढ़कर ऐसे लाभ की कामना करनी होगी जो सदा स्थिर रहे और बहुत सुख कर सिद्ध हो । धन ऐश्वर्य को तलाश करने के लिए तुम्हें बाहर ढूंढ खोज करनी पड़ती है पर अनन्द सुख का स्थान तो बिलकुल पास अपने अन्तःकरण में ही है । आओ, हृदय को साफ कर डालो, कूड़े कचरे को हटाकर दूर फेंकदो और फिर देखो कि तुम्हारे अपने खजाने में ही कितना ऐश्वर्य दबा पड़ा है ।

अपने विरोधियों पर तुम्हें क्रोध आजाता है सो ठीक ही है । देखो, तुम्हारे सबसे बड़े शत्रु कुविचार हैं ये तेजाब की तरह तुम्हें गलाये डाल रहे हैं और घुन की तरह पोला कर रहे हैं उठो, इन पर क्रोध करो । इन्हें जी भरकर गालियां दो और जहां देख पाओ वहीं उनपर बरस पड़ो । खबरदार करदो कि कोई कुविचार मेरे घर न आवें, अपना काला मुँह मुझे न दिखावें वरना उसके हकमें अच्छा न होगा ।

लोभ—अरे लोभ में क्या दोष ? यह तो बहुत अच्छी बात है । अपने लिए जमा करना ही चाहिए इसमें हर्ज क्या है ? तुम्हें सुकर्मों की बड़ी सी पूंजी संग्रह करना उचित है, जिसके मधुर फल बहुत काल तक चखते रहो । दूसरे लोग जिन्होंने अपना बीज फुटक लिया और फसल के वक्त हाथ हिलाते फिरेंगे, तब उनसे कहना कि ऐ उड़ाने वालो तुम हो जो टुकड़े टुकड़े को तरसते हो और मैं हूँ जो लोभ के कारण इकट्ठी की हुई अपनी पूंजी का आनन्द ले रहा हूं ।

मोह अपनी आत्मा से करो । जब भूख लगती है तो घर में रखी हुई सामिग्री खर्च करके भूख बुझाते हैं । सर्दी गर्मी से बचने के लिए कपड़ों को पहनते हैं और उनके फटने की परवाह नहीं करते । शरीर को सुखी बनाने के लिए दूसरी चीजों की परवाह कौन करता है ? फिर तुम्हें चाहिए कि आत्मा की रक्षा के लिए सारी संपदा और शरीर को भी परवाह न करो । जब मोह ही करना है तो कल नष्ट होजाने वाली चीजों से क्यों करना ? अपनी वस्तु आत्मा है । उससे मोह करो उसको प्रसन्न बनाने के लिए उद्योग करो ।

समालोचना—

'सतयुग' यह मासिकपत्र 'सतयुग आश्रम, बहादुर गंज, इलाहाबाद' से श्री, "सत्य-भक्त" जी के सम्पादकत्व में प्रकाशित होता है । इसमें आने वाले जमाने के बारे में बड़े गंभीर, उच्च कोटि के मनन करने योग्य, महत्व पूर्ण लेख रहते हैं । इस पत्र में तथ्य पूर्ण भविष्य वाणियां भी छपा करती हैं प्रायः सच ही निकलती हैं । पत्र आध्यात्मिक, आस्तिकवाद और सदाचार का प्रचारकहै और सत्य का शान्ति मय युग लाने के लिए प्रयत्न कर रहा है । इसपर भी वार्षिक मूल्य १॥) मात्र है अखंड ज्योति के पाठकों से हम इसे अपनाने की अपील करते हैं । —सम्पादक

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

(रचयिता—श्री रतन कुमारजी)

बड़ा मजा जलने में भी है, यदि यूं जलकर निखर उठूं मैं।
या तो मिट ही जाऊं, या हीरा सा दमकूं अगर उठूं मैं॥
आग लगी हो—पर उसके कण-कण में महा-तेज छाया हो;
जो मुझको ज्योतिर्मय कर दे, जो मुझमें जौहर लाया हो॥
मस्ती से लहरा कर चिर—परिचित चरणों पर निखर उठूं मैं
बड़ा मजा जलने में भी है, यदि यूं जलकर निखर उठूं मैं॥

यह जगती बेशक दुःख में डूबी है और विषाद-भरी है।
बन्धन के घेरे में खेल रहे हैं, क्रूर समय—प्रहरी है॥
यहां वायु आहों से निर्मित; पानी आंसू का संचय है;
[illegible] व्यथा है पृथ्वी शव स्थान; सार से शून्य निलय है।
य[illegible] का रोना क्या, और न जय आह्लाद—करी है।
यह जगती बेशक दुःख में डूबी है और विषाद-भरी है॥

इसीलिये जीना भी सुन्दर, इसीलिये मरना भी सुन्दर।
चहल-पहल भी सुन्दर है, आंसू से जी भरना भी सुन्दर॥
और शिकायत किसी तरह की है बिलकुल फिजूल, बेमतलब;
बुरे—भले की स्थिति ही क्यों हो, जब परिचालित बन्दी हैं सब।
करने दो जो जिसको भाये; मना करें हम खुद किस बल पर?
इसीलिये जीना भी सुन्दर, इसीलिये मरना भी सुन्दर॥

आकर्षण पावन विभूति है; नहीं दोष है; नहीं बला है।
बे सोचे—समझे—बूझे—मन का लुट जाना मधुर कला है।
जिसने प्यार बिखेरा हो; जिसने प्राणों पर प्यार बसाया—
उसके चरण चूम तर जायें वे, जिनको कुछ प्यार न आया॥
विमल प्यार का एक घूंट ही जग का सबसे बड़ा भला है।
आकर्षण पावन विभूति है; नहीं दोष है, नहीं बला है॥

आज समझ पाया हूँ, दुनियां में रहना आसान नहीं है।
जीवन एक तपस्या है, जिसका कोई वरदान नहीं है।
दैन्य क्लेश से पूर्ण, और वैभव में पाप-बीज होते हैं;
जग विडम्बना—नद, जिसमें हँसते—रोते खाते गोते हैं।
लाचारी है जीता हूँ, यों जीने का अरमान नहीं है।
आज समझ पाया हूं, दुनियां में रहना आसान नहीं है॥

प्रकाशक—श्रीराम शर्मा, "अखण्ड-ज्योति" कार्यालय, मथुरा।
मुद्रक—हरचरन लाल शर्मा, पुष्पराज प्रिंटिंग वर्क्स, [illegible], मथुरा।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.